भँवर

पात्र

प्रतिभा	जगन
प्रतिमा	ज्ञान
प्रमिला	हरदत्त
नीलिमा	दीनू
नीहारिका	दर्जी
मन्दा	निर्मल

[पर्दा प्रतिभा के अपने कमरे में उठता है। यह कमरा ड्राइंग-रूम भी है और स्टडीरूम भी और बाहर जाते जाते मेक-अप पर एक दृष्टि डालने के हेतु इस में एक शृंगार-मेज भी रखी है।

बैठने के लिए कौच का मूल्यवान सेट और पढने के लिए एक सुन्दर मेज-कुर्सी सजी है। मेज पर एक ओर टैलीफ़ोन रखा है और दूसरी ओर कुछ पुस्तकें रैक में बड़े सुरुचि-पूर्ण ढग से चुनी हुई है। शृंगार मेज का दर्पण आदमी के कद का है और लकडी चमचमाते टीक की। छत पर बिजली का पखा मन्थर गति से चल रहा है।

कमरे में तीन दरवाजे और एक खिडकी है। दो दरवाजे दायीं दीवार में है। इधर का (दर्शकों की ओर का) बाहर बरामदे में और कोने का प्रतिभा के शयन कक्ष में खुलता है। सामने की दीवार के बायें कोने में एक दरवाजा है जो ऑगन को जाता है। बायीं दीवार में एक बडी खिडकी है जिसके पट बाहर को खुलते है।

सामने दीवार में अगीठी है जिस पर दो फूलदान और कुछ फ़ोटो सजे है। दरवाजों पर भारी पर्दे लटक रहे है जिनका रग मेजपोशों, अगीठी के कपड़े, टेबल लैम्प के कवर और कौचों तथा दीवारों के रग से मिलता है।

प्रतिभा २८, २५ वर्ष की सुन्दर युवती है। न बहुत लम्बा न छोटा कद, सुगठित देह, गौर वर्ण और कुछ विचित्र आकर्षण वाली सालस, लालस आँखें। एम० ए० में पढती थी तो उसे अपने दर्शन अध्यापक प्रो० नीलाभ से प्यार हो गया था। किन्तु प्रेम की वह सुलगती चिगारी कभी ज्वाला न बनी, क्योंकि अध्यापक नीलाभ प्रेम के सम्बन्ध में बहुत पहले विरक्त हो चुके थे। अपने अध्यापन जीवन के आरम्भ में उन्होंने अपनी एक छात्रा से विवाह कर लिया था।

अनुभव इतने कटु थे कि उस बधन से मुक्ति पाने के पश्चात् विवाह तो दूर, वे एक प्रकार से नारी मात्र से विरक्त हो गये थे, यद्यपि उनकी यही विरक्त उनका आकर्षण बन गयी थी।

उस ओर मार्ग न पाकर प्रतिभा के प्रेम की धारा पलटी तो अपने ही सहपाठी सुरेश की ओर बह चली। सुरेश बहुत देर से उसके प्रेम का याचक था। टैनिस का माना हुआ खिलाडी, सम्पन्न और सुन्दर ! पहले प्रतिभा उसे प्रश्रय न देती थी, अब अपनी असफलता में वह मुडी ती द्विगुन वेग से उसकी ओर बढी और उसने तत्काल उससे सिविल मैरज कर ली, परन्तु शीघ्र ही पता चल गया कि उससे भारी गलती हो गयी है। छ महीने की तनातनी के पश्चात् उसने बिवाह के बधने से मुक्ति पा ली।

इस बात को एक वर्ष बीत गया है। सुरेश ने अपनी एक दूसरी सहपाठिनी शकुन्तला से विवाह कर लिया है, पर प्रतिभा अभी एकाकी बनी हुई है। इन कटु-अनुभवों ने जहाँ उसके चचल-सौन्दर्य को सौम्यता प्रदान कर दी है, वहाँ उसकी आँखों को ऐसी गहराई बख्शी है जिसके लिए बहुत-सी चीजें पारदर्शी हो गयी हैं। उसके आकर्षण का केन्द्र उसकी यही आँखें और उसका वह सूक्ष्म चाचल्य है, जो, यद्यपि उसके कटु अनुभवों के कारण सौम्यता की चट्टानके बहुत नीचे दब गया है, पर कभी कभी जोर मार कर चट्टान को हिला देता है।

वह पहले भी कम सुन्दर न थी, परतु इन सब घटनाओं, अनुभवों और विरिक्त-मय-आसक्ति ने उसके आकर्षण को दुर्निवार बना दिया है। रहा उसका प्रेम, तो वह अब उस नदी का सा है जो एक ओर मार्ग न पाकर दूसरी ओर और दूसरी ओर रुकने पर तीसरी ओर बढ़ती है और गति के अवरुद्ध होने पर जब पलटती है तो अपने ही किनारो को तोडती चली जाती है।

पर्दा उठने पर प्रतिभा एक कौच पर बडी अन्यमनस्कता से लेटी दिखायी देती है। उसका सिर कौच के बाजू पर टिका हुआ है, एक पाँव कौच पर है और दूसरा फर्श के कालीन पर। कुछ क्षण इसी प्रकार लेटे-लेटे छत की ओर देखती रहती है फिर थकी सी अगडाई लेती है।]

प्रतिभा : (अगडाई लेते हुए) *ओह . . ओ ! कितना बडा शून्य है यह जीवन !! कहीं भी तो कोई ऐसी वस्तु नहीं जो ठोस हो; जिसका सहारा लिया जा सके !* (बाहों को ढीला छोड देती है और वे धप से उसकी गोद में आ गिरती है—नौकरानी को आवाज देती है) *मन्दा ...मन्दा !*

मन्दा : (आँगन से) *जी आयी !* (कुछ क्षण बाद प्रवेश करती है) *जी !*

प्रतिभा . *यह खिडकी खोल दे !*

(मन्दा खिडकी खोलती है)

प्रतिभा : (उठ कर खिडकी के निकट जाती है) *ओह, बाहर तो घटा उमडी आ रही है और यहाँ आकाश एकदम सूना है। बादल का एक टुकडा भी तो कहीं नहीं।*

मन्दा : *कुछ मुझ से कहा बडी दी ?*

प्रतिभा : *कुछ नहीं। नीम्बू के शर्बत का एक गिलास बना ला !*

मन्दा : *अभी तो खना खाकर आप . . !*

प्रतिभा *बहस न कर, जो कहा ला !*

मन्दा : *जी अच्छा !*

[चली जाती है—बैक-ग्राऊ ड में प्रतिभा के पिता श्री रामनारायण मल्लिक की आवाज आती है]

श्री मल्लिक : *दीनू, साफ कर दिया साइकिल ? मुझे दफ्तर समय पर पहुँचना है। टैकनिकल यूनिट की मीटिंग होने वाली है*

पूरे सवा दो बजे। और वे मेरे फाइल उठा कर कैरियर के साथ बाँध दे!

[आँगन के दरवाजे से आकर बदबदाते हुए बरामदे की और जाते जाते]

— . *नाक में दम आ गया इस लड़ाई के मारे! पेट्रोल ही नहीं मिलता और साइकिल पर रोज देर हो जाती है। और फिर धूल . एकदम निकृष्ट ऋतु है:—इस तपती दुपहर और उडती धूल में साइकिल पर दफ्तर जाना—एक मुसीबत है।*

[बेजारी से सिर हिलाते हुए बरामदे के दरवाजे से निकल जाते है]

प्रतिभा : (वापस मुडते हुए) *दफ्तर और फाइल! पापा को इन दो चीज़ो के अतिरिक्त दुनिया में किसी वस्तु से सरोकार नहीं।*

[शृगार-मेज के सामने जा खड़ी होती है और योंही दर्पण में देखते हुए बालों पर हाथ फेरती है। आँगन से प्रतिभा की माँ का स्वर सुनायी देता है]

माँ : *मै पूछती हूँ वह मन्दा कम्बख्त किधर गयी? डिनर पर आज क्या पकेगा, कुछ इस की भी खबर है। कसटर्ड तो कल पका था, आज क्या होगा?*

प्रतिभा : (वापस आकर कौच में धँसते हुए, घुटे घुटे स्वर में) *लंच और डिनर! ममी को इस के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझता। अभी लंच से निपटे नही कि डिनर की रट लगा दी। कोई समय हो, सैर का या आराम का, पापा दफ्तर की गाथा ले बैठेंगे और ममी लच या डिनर की। रह गयी तीमा और मीला तो वे...*

[प्रतिमा विद्युत वेग से प्रवेश करती है—सत्रह अठारह वर्ष की युवती, एफ० ए० में पढती है। सुन्दर है, चचल है, जलने और जलाने में ज्वाला के सभी गुणों से विभूषित है]

प्रतिमा . *दीदी, दीदी, तनिक देखना। मै ठीक भी लायी हूँ ये चीजें ? फूली न समाती थी मीला अपने टॉयलेट-बक्स पर। फर्स्ट क्लास लायी हूँ मै भी। देखो यह लिपस्टिक, यह पाऊडर, यह फाऊडेशन लोशन !—सब आर्डीना के है। और यह हूबीगाँट का रूज और मस्कारा और आई-ब्रो पेंसिल* (हँसती है—आत्म तुष्टि की हँसी) *क्यो हैं न फर्स्ट रेट ! जल जायगी मीला।*

(जैसे आयी थी वैसे ही विद्युत-वेग से भाग जाती है)

प्रतिभा : *कोई सीमा भी है ! टॉयलेट के सिवा इन लडकियों को और कुछ आता हो नहीं।*

[बैक ग्राऊ ड में हारमोनियम के साथ धीरे धीरे गाने का स्वर उठता है]

यह सावन का घन आया !
क्या नया सदेशा लाया ?

— (उठ कर व्यग्रता से कमरे में घूमती है) *नीहार सांझ की पार्टी के लिए अभ्यास कर रही है शायद। वही भावुक, घटिया, फिल्मी गाने ! न जाने ये लोग किस प्रकार इतना समय ऐसे थर्ड-रेट गीत सुनने और गाने को निकाल लेते हैं ?*

(गाना बराबर चलता है —)

रिमझिम रिमझिम बून्दियाँ बरसें,
नयन दरस को तेरे तरसें,
साजन,
ओ साजन !
डेरा परदेस लगाया !

— : *अत्यन्त संकीर्ण और परिमित है घेरा इन के जीवन का— बस उसी में घूमे जाते हैं, रात दिन उसी में घूमे जाते हैं— बाहर निकलने का तनिक भी प्रयास नहीं करते। कोई*

कुलाँच नहीं; कोई उडान नहीं; उच्च, उत्ताल, उद्दाम जीवन के लिए कोई इच्छा नहीं; सघर्ष नहीं !

(गाना बराबर चलता है —)

जीवन में जवानी आयी,
मस्ती मस्तानी छायी,
साजन,
ओ साजन !
दिल बैठ बैठ घबराया !

— : *आज फिर मन-मस्तिष्क को बलात् यह सब सुनना पडेगा। पापा फ्लैट भी तो नहीं बदलते* (स्वय ही व्यग्य से हँसती है) *बदल भी ले तो क्या ? पापा, ममी, तीमा, मीला और और उनकी निरर्थक पें पें—कही मुक्ति नही—इस झूठे, निकम्मे, खोखले जीवन से कहीं मुक्ति नहीं !*

यह सावन का घन आया।
क्या नया संदेशा लाया ?

[बेक ग्राऊ ड में गाने का स्वर बराबर आता रहता है। प्रतिभा व्यग्रता से खदबदाती सी कमरे में घूमती है, फिर जाकर बरामदे का दरवाजा बन्द कर देती है। गाने की आवाज अत्यधिक धीमी पड जाती है। प्रतिभा नौकरानी को आवाज देती है और खिडकी में जा खडी होती है]

प्रतिभा : *मन्दा !*

(कोई उत्तर नहीं देता)

— : (क्षण भर बाद फिर आवाज़ देता है) *मन्दा !*

मन्दा : (आँगन से) *जी लाय !*

[फिर खिडकी में बाहर देखने लगता है। नीलिमा प्रवेश करती है]

नीलिमा : *तीमा !*

[प्रतिभा अपने ध्यान में मग्न बाहर खिड़की में उमड़ते घुमड़ते बादलों को देख रही है]

—: (पास आकर) *तीभा . प्रतिभा !*

प्रतिभा . (मुड़ कर) *आओ नीली ! कहो सिखा आयीं गाना नीहार को ?*

नीलिमा : *गाना ?*

प्रतिभा : *हाँ, साँझ की पार्टी के लिए !*

नीलिमा : *नहीं, मैं तो अभी अभी आ रही हूँ बाजार से। प्यास लग रही थी, सोचा पानी पीकर ही ऊपर जाऊँ।*

प्रतिभा . *आओ बैठो।* (नौकरानी को आवाज देती है) *मन्दा .. मन्दा !*

मन्दा : (आँगन से) *लायी दीदी !*

प्रतिभा : *क्या हो गया तुझे ? इतनी देर हो गयी और एक गिलास शरबत .*

नीलमा *अरे, तो दो मँगाओ।*

प्रतिभा . *नहीं, मैंने तो यों ही मँगाया था। जी कुछ घुट-सा रहा था। प्यास नहीं है मुझे।* (नौकरानी को आवाज देती है) *मन्दा !*

(बढ़ कर आँगन की ओर जाने लगती है)

नीलिमा : (उसे बैठाते हुए स्वयं भी बैठती है) *बैठो आ जायगी मन्दा।* (स्वर को धीमा कर के) *मुझे आज चाँदनी-चौक में सुरेश जी मिल गये।*

प्रतिभा : (चुप रहती है)

नीलिमा : *उनके साथ शकुन्तला भी थी।*

प्रतिभा : (चुप रहती है)

नीलिमा : (अरमान भरे स्वर में) *जोड़ी बुरी तो न थी तुम्हारी तीभा। कलचिड़ी-सी लगती है कुन्ती सुरेश के साथ। पर*

तुम .....तुम्हारी जोडी सुन्दर थी। क्यो न चल सके तुम दोनों ?

प्रतिभा : (जैसे इस जिक्र ही से उसे कष्ट होता है) कई बार तो बता चुकी हूँ, किसी प्रकार की बौद्धिक-समानता न थी हम दोनों में।

नीलमा : तुम ने प्रयास ही नही किया।

प्रतिभा : व्यर्थ था।

नीलिमा : फिर विवाह ही क्यों किया था तुम ने ? (प्रतिभा कोई उत्तर नहीं देती) तुम्हे पहले से सन्देह होगा, तभी तो सिविल-मैरेज पर जोर देती थीं तुम !

प्रतिभा : हटाओ इस किस्से को। मै सुरेश की टैनिस पर मुग्ध थी, पर उसके जीवन का घेरा इतना परिमित है, इसका मुझे स्वप्न मे भी ध्यान न था। जीवन भर उसी परिधि मे बँधे रहने की कल्पना भी कष्ट-प्रद थी। शकुन्तला प्रसन्न रहेगी वहाँ। मैं तो इसी तरह अच्छी हूँ। बहिर्जगत से जितना चाहती हूँ, रस ले लेती हूँ, नहीं घोंघे की भाँति अपने आप में मस्त पड़ी रहती हूँ। बहुत ऊब जाती हूँ तो प्रोफेसर नीलाभ के पास चली जाती हूँ।

नीलिमा : नीलाभ !

प्रतिभा : उनके पास कुछ पल बिताने से मुझे शान्ति मिल जाती है। एक प्रकार से एकाकी-सा जीवन व्यतीत कर रहे हैं वे।

नीलिमा : परन्तु आयु तो उनकी कुछ इतनी अधिक नहीं।

प्रतिभा : आयु का प्रश्न नही। उन्होंने इतना काम किया है और इस निष्ठा से किया है कि थक-से गये हैं। और समस्त कोलाहल से दूर, आराम से पडे लिखने-पढ़ने में व्यस्त रहते हैं। उनकी अनुभूतियाँ इतनी विशाल और गहरी हैं और ज्ञान की इतनी बड़ी निधि उनके पास है कि उनके निकट कुच्छेक पल बिताने से मन हल्का हो जाता है।

मै तो जब इस वातावरण से ऊब उठती हूँ, उनके पास चली जाती हूँ।

नीलिमा . तुम पुनः विवाह क्यो नहीं कर लेतीं ?

प्रतिभा : विवाह ?

नीलिमा : हाँ, प्रदीप ...नारायण . विश्वा . . नगेन्द्र और अब ज्ञान साहब—इस .फ्रस्ट्रेशन ❀ (*Frustration*) से लाभ !

प्रतिभा :—मैने पहली बार हाँ विवाह करके गलती की। वास्तव में मेरी प्रकृति विवाह के अनुकूल ही नही । मेरे मस्तिष्क के किसी कोने मे स्वतन्त्र और सुसस्कृत जीवन का कुछ ऐसा सुन्दर, सजीव और पवित्र चित्र अंकित है कि मै अब फिर विवाह करके उसे पुनः भ्रष्ट नहीं करना चाहती। यही कारण है कि सुरेश से मेरी चार दिन भी न बन सकी। मेरा वश चले तो मै कही एक किनारे बैठ कर अपनी उसी दुनिया के सुख-स्वप्न में अपना जीवन बिता दूँ, पर इस समाज मे ऐसा सम्भव नहीं, सो मैं सब से मिलती हूँ, परन्तु कमल के पत्ते की भाँति— पानी मे रह कर भी उससे ऊपर !

[उठ कर खिडकी में जा खडी होती है। चुपचाप बाहर की ओर देखने लगती है। तभी मन्दा शरबत का गिलास लेकर आती है।]

मन्दा : बड़ी दीदी शरबत !

प्रतिभा : (मुड कर) इनको दे।

नीलिमा : (शरबत का गिलास लेते हुए) तुम हमारे लिए सदा एक पहेली बनी रही तीभा। (शरबत का घूँट भरते हुए) कहो, तुम्हारा ब्लाऊज़ सिल गया ?

प्रतिभा : नहीं अभी नहीं सिला।

❀ *Frustration* = विक्षिप्ति ।

नीलिमा : मेरा तो सिल गया। स्लीव-लेस* ही सिलवाया मैने। तुम ने जो कहा था कि स्लीव लेस .

प्रतिभा · मैने तो फुल-स्लीवज का बनवाया है।

नीलिमा · फुल स्लीवज़ का ! किस प्रकार की है बाहे ?

प्रतिभा . आधुनिक रूसी ढग की (हँसती है) एकदम निरावरण सौन्दर्य से अधखुला-अधछिपा, झीना-झीना सौन्दर्य कहीं आकर्षक लगता है।

नीलिमा : तब तो साडी भी बॉटल-ग्रीन रग की होगी।

प्रतिभा : हाँ, क्यों ?

(प्रतिमा फिर खिडकी में देखती है।)

नीलिमा : उस दिन जब मैने यही दोनों चीजें पसन्द की थी तो तुम हँस दी थी और अब .. यह खिडकी में बार-बार किसको देख रही हो ?

प्रतिभा : खिड़की में ! ....किसी को भी नही... . यो ही उमड़ते हुए बादलों को देख रही थी।

नीलिमा (अपनी बात का तार पकडते हुए) और उस समय जिन चीजों पर तुम ने नाक भौ चढ़ायी थी, वही तुमने अब आप सिलवा लीं।

(मन्दा दरवाजे से झाँकती है)

मन्दा : बडी दीदी, दर्जी आया है।

प्रतिभा . बुला ला।

नीलिमा · तुम ने कहा था, स्लीवज़ नारी की उस दासता का चिन्ह हैं जब उसे सात पर्दों के अन्दर रखा जाता था। अब जीवन आज़ादी चाहता है। वर्षा ऋतु की शीतल, सरसराती बयार मे स्लीव-लेस ब्लाऊज़ का आनन्द.....

(दर्जी प्रवेश करता है)

दर्जी · सलाम हुजूर !

---

*Sleeve less = बिन आस्तीन का।

प्रतिभा · क्यों मियाँ साहब, बहुत दिनो मे आये। कहो कर लाये ठीक ? अब तो कहीं से तंग नहीं ?

दर्ज़ी . पहन कर देख लीजिए सरकार। हाँ, हाँ, इसी ब्लाऊज़ पर पहन लीजिए। कुछ टाइट फिट सिया था, नहीं कट (cut) तो इतनी अच्छी है सरकार कि इसी को देख कर मिसेज जमील अपना ब्लाऊज़ सीना दे गयीं।

प्रतिभा (ब्लाऊज पहनते हुए) हाँ, इस बार तो ठीक लगता है। क्यो नीली !

नीलिमा तुमने खूब उल्लू बनाया मुझे तीभा। कितना फबता है तुम्हारे अगों पर ! मै तो इसी समय बाज़ार जाऊँगी और खडे-खडे इसी स्टाइल का ब्लाऊज सिलवा कर लाऊँगी।

दर्ज़ी सारे का सारा हाथ का सिला है हुजूर। दो दिन लग गये केवल इसकी चुन्नटें डालते।

प्रतिभा : (ब्लाऊज उतार कर देते हुए) और साड़ी ?

दर्ज़ी · यह रही सरकार !

प्रतिभा . इधर मेज़ पर रख दो और देखो मियाँ साहब, दूसरे कपडे भी जल्दी सियो।

दर्ज़ी : (साडी को मेज पर रखते हुए) बस परसों ले लीजिए हुजूर।

[ब्लाऊज को तह लगा कर साडी के ऊपर रखता है और—'सलाम हुजूर' कह कर चला जाता है]

नीलिमा : हमारा दर्ज़ी ब्लाऊज सीकर लाया तो जगन भी बैठा था। बोला यह कैसा सन्यासिनों का सा रंग चुना है आपने ?

प्रतिभा . जगन, कौन जगन ?

नीलिमा . अरे जगन.....इडीपेंडेंट क्रिकेट टीम का कप्तान।

प्रतिभा . ओह ! कदाचित अब क्रिकेट खेलते-खेलते उसका मन ऊब गया है। अब वह स्वय गेंद बनना चाहता है ! (हँसती है) देखना बेचारे को ग्राऊंड के पार ही न फेंक देना।

नीलिमा : तुम सब को अपने ही जैसा समझती हो। वह तो तीमा के कारण..... .

प्रतिभा : (उसकी बात को सुनी अनसुनी करके हँसते हुए) ठोकर मारो, किन्तु ऐसी भी नहीं कि फिर पाना चाहो तो पा ही न सको।

नीलिमा तुम्हारे उन दार्शनिक महाशय का क्या हाल है—ग्राउंड से परे ही पड़े है या वरे आ गये हैं।

प्रतिभा : दार्शनिक महाशय ?

नीलिमा : प्रो० ज्ञानचन्द्र . .. ..

प्रतिभा : हमारे मध्य वही अन्तर है— न कम, न ज्यादा ! अन्तर को एक जैसा रखना मुझे खूब आता है। हमारी मित्रता बौद्धिक है। मै सदा उन लोगों को पसन्द करती हूँ .....

नीलिमा : जो तुम से बौद्धिक मैत्री रख सकें ! (व्यग्य से) यह बौद्धिक मैत्री भी खूब ढोग है तुम्हारा। जब से ज्ञान साहब यूनिवर्सिटी में आये हैं अथवा यों कह लो कि पड़ोस में आये हैं, तुम तो बस घर ही की हो कर रह गयी हो। न सिनेमा.....

प्रतिभा : मस्तक जिनका शून्य है, उन्हीं को भाता है सिनेमा।

नीलिमा : न पिकनिक.....न सैर तमाशा.....

प्रतिभा : बेकार लोगों के व्यसन है। मैं जब भी कभी सिनेमा जाने को विवश हुई हूँ, मुझे अपार मानसिक-यन्त्रणा सहनी पड़ी है। ऐसे निकम्मे और भोंडे चित्र बनाती हैं हमारी फ़िल्म कम्पनियाँ कि मैं पागल हो उठती हूँ। जी चाहा करता है— जाकर सिनेमा के पर्दे को फाड़ दूँ और ज़ोर ज़ोर से चीख उठूँ।

नीलिमा : तुम भी खूब बनती हो तीभा। हरदत्त साहब के साथ तो..... .

प्रतिभा . मैं कई बार सिनेमा देखने गयी हूँ, यही कहना चाहती हो न

तुम। पर सुरेश के साथ सम्बन्ध तोडने के बाद मैं अपने को कुछ इतनी अकेली-अकेली, ऊबी-ऊबी, थकी-थकी पाती थी, हरदत्त कुछ इतना अनुरोध करते थे कि विवश होकर चली जाती थी।

नीलिमा . हरदत्त सिनेमा के बडे रसिया हैं।

प्रतिभा : वे सदैव एक बुद्धिवादी का आवरण चढाये रहते है, पर जब वे सिनेमा-हाल में बैठे-बैठे अपने खोल को भूल कर, थर्ड-रेट गानों पर सिर धुनने लगते है तो मै प्रायः हँस देती हूँ और कई बार जब फिल्म अत्यन्त निकृष्ट होता है, मेरा जी चाहा करता है कि अपना और उनका गला घोट दूँ।

नीलिमा : प्रोफेसर ज्ञान सिनेमा पसन्द नहीं करते ?

प्रतिभा : वे बुद्धिवादी है। उनके निकट सिनेमा देखना समय नष्ट करने के बराबर है।

नीलिमा . तुम भी तो बुद्धिवादी हो।

प्रतिभा यही तो मुसीबत है। कभी जब मै बाहर जाना चाहती हूँ तो वे नहीं चाहते और कभी जब उनका जी होता है तो मेरा मूड नही होता।

नीलिमा : न जाने तुम दोनों घटों बैठे क्या मिसकोट करते हो। मै तो ऊब जाऊँ ऐसी बौद्धिक-मैत्री से। खाली बैठे-बैठे उकता जाय मेरा तो मन !

प्रतिभा : ज्ञान साहब के साथ कभी ऐसा नहीं लगा कि हम खाली हैं अथवा समय व्यर्थ गँवा रहे है। उनके दृष्टि-कोण, उनके दृष्टि-मूल्य सब दूसरों से भिन्न हैं। उन्होंने स्वय प्रो० नीलाभ से शिक्षा प्राप्त की है और मै सच कहती हूँ नीली, कभी-कभी मुझे ऐसे लगता है कि अन्त को जैसे मैं..... ..मैं....

नीलिमा : तुम उपयुक्त साथी पा गयी हो। मेरी बधाई लो ! पर देखो, तुम और कहीं जाओ या न जाओ पर अपने इस बौद्धिक संगी को लेकर मेरे यहाँ संध्या को अवश्य पहुँच

जाना। मन्दा और दीनू की मुझे आवश्यकता होगी। तुम जानती हो नौकर हमारा बीमार है, केवल एक-दो घटे की बात है, अपनी ममी से कह देना।

(मन्दा आती है)

मन्दा : बड़ी दीदी, एक साहब मिलने आये है। यह रुक्का दिया है।

प्रतिभा : (रुक्का देखते हुए) जगन्नाथ !

नीलिमा . अरे जगन है। लो वह यहाँ आ पहुँचा। पार्टी का सब प्रबन्ध तो वास्तव में वही कर रहा है।

प्रतिभा : बुलाओ तो देखे तुम्हारे उस क्रिकेटर को। इसी प्रकार हमारा भी क्रिकेट से थोडा बहुत परिचय हो जायगा।

नीलिमा नही भई, अब जाने दो। सॉझ को आना ज्ञान साहब के साथ। परिचय छोड क्रिकेट की सारी टेकनीक सीख लेना (उठते हुए लम्बी सास लेकर) कितना अच्छा लगता है यह ब्लाऊज तुम्हे !

प्रतिभा : तुम्हें इतना पसन्द है तो ले जाओ। एक ही तो साइज़ है हम दोनों का, मैं तुम्हारे वाला पहन लूँगी।

नीलिमा : ले जाऊँ, सच !

प्रतिभा : ले जाओ, पहन कर देख लो।

नीलिमा (साड़ी और ब्लाऊज़ की ओर अरमान-भरी आँखों से देख कर) नहीं भई, तुम्हीं पहनो।

प्रतिभा : न जाने किस क्षणिक-भावना के अधीन मैंने इसे सिलवा लिया। अब पहनते हुए सकोच होता है। न जाने कभी-कभी मन कैसा हो जाता है। चाहती हूँ अपनी इस सारी बौद्धिकता को उठा कर एक ओर रख दूँ और साधारण लोगों की भाँति हँस खेल सकूँ। पर दूसरे ही क्षण प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती है। तुम यह ले जाओ नीली। मैं तुम्हारे वाला पहन लूँगी।

नीलिमा : (उदास हँसी के साथ) तुम जो भी पहनोगी सब उसी की प्रशसा करेंगे। अभी रखो। आवश्यकता हुई तो मँगा लूँगी।

(बैक ग्राऊन्ड से फिर गाने की ध्वनि आती है।)

यह सावन का घन आया
क्या नया सँदेशा लाया

—. यह नीहार तो पडी है बाजे के पीछे। दो दिन हुए पडित अमरनाथ सिखा गये थे यह धुन। बस जब देखो सावन का घन चला आ रहा है। कान पक गये सुनते सुनते। लो अब पहुँच जाना ज्ञान साहब को लेकर। मैने उन्हे निमन्त्रण भिजवा दिया है, फिर याद दिलाने का प्रयास करूँगी। पर यदि उन्हें निमन्त्रण पत्र न मिला या मै याद न दिला सकी तो तुम लेती आना अपने साथ। बाई.. ... .बाई !

[चली जाती है बैक ग्राऊन्ड में गाना और भी साफ़ सुनायी देता है।]

सब सखियाँ नाचें गायें
मिल-जुल सावनी मनायें
साजन
ओ साजन
क्या नव-जीवन है छाया
यह सावन का घन आया
क्या नया सँदेशा लाया।

प्रतिभा : (जल कर अपने आप से) नया सँदेश और नया जीवन ! (एक कटु व्यग-मय हँसी के साथ) फिल्मी गाने, फिल्मी फ़ैशन और फिल्मी जीवन.....ऊँह !

(विरक्ति से सिर हिलाती है, टेलीफोन की घटी बज उठती है।)

— : (चौंका उठा कर) हैलो.....हैलो .. . . कौन, हरदत्त साहब.....नमस्कार नमस्कार.....धन्यवाद। पर आज

तो क्षमा कीजिए . ..... (हँसती है) नहीं नहीं, यह बात नहीं। आज नीहार की वर्षगाँठ है। अभी अभी नीलिमा बुला गयी है। न गयी तो जीवन भर क्षमा न करेगी . अजी छोडिए, न नयी न पुरानी, फिल्मों की तो एक ही दुयिना है—घटिया, भावुक और रूमानी... हाँ अवश्य पधारिए, पर सिनेमा मै न जाऊँगी। नमस्कार !

(चोंगा रख देती है। मन्दा दरवाजे से झाँकती है।)

मन्दा : प्रोफेसर ज्ञान आये है बडी दीदी।

प्रतिभा : ले आ।

मन्दा : (बैक ग्राऊन्ड में आवाज देती है) चले आइए साब !

(प्रोफेसर ज्ञान प्रवेश करते हैं।)

ज्ञान : (आते हुए) नमस्कार !

नीलिमा . (मुख पर मुस्कान झलक उठती है, परन्तु मस्तक की रेखाएँ नहीं मिटतीं) नमस्कार ! आइए, बैठिए।

ज्ञान : कहिए कुशल तो है। ये लकीरें सी कैसी हैं मस्तक पर ?

प्रतिभा : मेरी छोड़िए, अपनी कहिए। इतने दिनों से दिखायी नही दिये आप ?

ज्ञान : एक नाटक लिखने का प्रयास कर रहा था।

प्रतिभा : (हँस कर) नाटक ! नाटक आप कब से लिखने लगे ?..... दिखाइए !

ज्ञान : (आराम कुर्सी पर बैठते हुए) लिख नहीं सका। जो कुछ लिखा था, उसे फाड़ कर आप की ओर चला आया हूँ। (हँसते हैं) इतना कुछ पढ़ने के पश्चात् लिखना शायद अब दुष्कर है।

प्रतिभा . यही दशा मेरी है। कई बार जी चाहता है कि अपनी सब उदासी, सब घुटन, समस्त व्यग्रता पक्तिबद्ध कर दूँ।

बहुत सोचती हूँ, खाके बनाती हूँ, पर जब लिखने बैठती हूँ तो दो पक्तियाँ भी नही लिख पाती।

ज्ञान : मेरा विचार है, आपको फिर शादी कर लेनी चाहिए। आपकी सब उदासी, घुटन, व्यग्रता समाप्त हो जायगी।

प्रतिभा : शादी !

(हँसती है।)

ज्ञान : फ्रायड का कथन है ...

प्रतिभा : मैने फ्रायड पढ़ा है, पर कदाचित् मैं उन लोगों में से हूँ जो शादी के लिए नही बने। आप नाटक किस विषय पर लिख रहे थे ?

ज्ञान : फ्रायड कहता है— पवित्र प्रेम मात्र कपोल-कल्पना है। प्रत्येक प्रेमी अपने हृदय की किसी गहन गुफा में यौन-भावना को छिपाये होता है— परन्तु मेरा विचार है कि स्थायी प्रेम उतना शारीरिक नही होता जितना आध्यात्मिक।

प्रतिभा : स्थायी प्रेम अतृप्ति का दूसरा नाम है।

ज्ञान : आप ठीक कहती हैं। प्रायः स्थायी प्रेम अतृप्ति के अतिरिक्त और कुछ नही होता। मानव अपने प्रेमी के साथ अपनी यौन-भावना को तृप्त नही कर पाता और जीवन भर उस अतृप्ति की आग में जलता रहता है। समझता है कि उसे अपने प्रिय से अमर, अनन्त, कभी न कम होने वाला, न मरनेवाला पवित्र-प्रेम है।

प्रतिभा : यद्यपि उसके हृदय में निरन्तर सुलगने वाली वस्तु प्रेम नहीं वरन् सेक्स की वह सुलगती चिगारी होती है जो कभी धधक कर ज्वाला न बनी।

ज्ञान : आप ठीक कहती है। दूसरा प्रेम वह होता है जो मात्र वासना की तृप्ति ही को अपना ध्येय समझता है। प्रायः लोग अपनी सुन्दर, सुशील, पतिव्रता स्त्रियों को छोड़ कर बाजार की किसी अनुभवी वेश्या की चौखट पर माथा रगडते हैं और समझते है कि उन्हें उस वेश्या से अथाह, अपार

अनन्त प्रेम है। यद्यपि उनका प्रेम उस शारीरिक आनन्द से अधिक कुछ नहीं होता जो उन्हें घर की शरमीली, लजीली सगिनी के सान्निध्य में प्राप्त नहीं होता।

प्रतिभा : जी !

ज्ञान : परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि पुरुष उस नारी से विवाह करने को विवश होता है जो न केवल उसके लिए कोई विशेष शारीरिक आकर्षण नहीं रखती, बल्कि जिसके शरीर से वह उपेक्षा भी रखता है, परन्तु धीरे धीरे वह नारी अपनी सरलता, शालीनता और बुद्धिमत्ता से उसके मन-मस्तिष्क पर ऐसे छा जाती है कि वह उससे उपेक्षा के बदले प्रेम करने लगता है और उसके सीधे-साधे रूप में भी सौन्दर्य ढूँढ लेता है। उसके उस प्रेम में शारीरिक प्रेम के टाइफ़ाइड का सा ज्वर नहीं होता वरन् यक्ष्मा की सी हल्की-हल्की उष्णता होती है, परन्तु उस धीमी धीमी उष्णता से उसे जीवन भर मुक्ति नहीं मिलती।

प्रतिभा : आपको शादी कर लेनी चाहिए।

ज्ञान : (आशा भरे स्वर में) शादी !

प्रतिभा : (हँस कर) किसी ऐसी ही कुरूप पर बुद्धिमती, सुशील, सरल लडकी से।

(हँस देती है)

ज्ञान : हम बुद्धिवादी प्रेम के सन्निपात की ज़ंजीरों से कब के निकल आये है। हमारे यहाँ प्रेम की चिंगारी सुलग तो सकती है, ज्वाला नहीं बन सकती। यह ब्लाऊज़ और साड़ी किस की है ? प्रतिमा की होगी !

प्रतिभा : नहीं मेरी है।

ज्ञान : आप की !

प्रतिभा : (हँसते हुए) सुलगती हुई चिंगारी को कभी ज्वाला बनाने का प्रयास किया करती हूँ।

ज्ञान : यह तो बडी भडकीली है। सर्वथा बच्चो की सी। आप तो इतनी सौम्य है .

प्रतिभा : मनुष्य ज्यों ज्यों बडा होता है, उसकी आकाँक्षाएँ अतीत की ओर भागती है। मैं एक बार फिर बच्ची बन जाना चाहती हूँ। आज साझ नीली के यहाँ पार्टी है।

ज्ञान : ओह—!

प्रतिभा . आपको भी तो निमन्त्रित किया है।

ज्ञान : किया तो है, पर मेरा वहाँ जाने का तनिक भी विचार नहीं। आप जा रही हैं ?

प्रतिभा : बैठे बैठे उकता गयी थी। सोचा कि हो आऊँ। एक सीढी ही तो है। न गयी तो नीलिमा रूठ जायगी। नीहार की वर्ष-गाँठ है।

ज्ञान : वर्ष- गाँठ (हँसते है) ये लोग पार्टियों के नित्य नये बहाने गढ लेते है।

प्रतिभा : आप Sceptic हैं।

ज्ञान : जो हो, पर मैं तो इन पार्टियों में जाकर ऊब उठता हूँ। स्त्रियाँ इस बात का यत्न करती हैं कि वे अपनी कुरूपता को अधिक से अधिक छिपा सकें और पुरुष इस बात का कि वे अधिक से अधिक Chivalrous दिखायी दें !—वही खोखले शिष्टाचार, वही भोंडे मज़ाक, वही भद्दे फ़ैशन।—इन पार्टियों से अधिक विरस और कोई वस्तु नहीं। इस से तो अच्छा है कि चलिए कनाट पैलेस चलें, ज़रा काफ़ी पियें।

प्रतिभा . नहीं पार्टी में तो जाना ही पडेगा। रही साड़ी, यह अब न पहन कर जाऊँगी। यह नीली को दे दूँगी। उसे बहुत पसन्द है।

ज्ञान : हाँ, यह उसे दे दीजिए।

Sceptic = सन्देह-शील,

प्रतिभा : एक बार पहन कर तो देखूँ, कैसी लगती है।

[साडी ब्लाऊज लेकर अन्दर कमरे की ओर जाने लगती है, प्रो० ज्ञान जाने को उठते है।]

प्रतिभा : अरे चल दिये। बैठिए ना।

ज्ञान : नही मैं अब चलता हूँ।

प्रतिभा : बैठिए भी। पानी बरसा चाहता है। भीग जाएँगे आप। मै साडी बदल कर आयी। तनिक देखिये तो कैसी लगती है मुझे।

(अन्दर चली जाती है, मन्दा आती है।)

मन्दा . (दरवाजे से) दीदी. ... (अन्दर आकर) बड़ी दीदी किधर गयीं ?

ज्ञान : अन्दर कपड़े बदल रही हैं।

मन्दा : एक साब आये है। यह कार्ड दिया है।

प्रतिभा : (अन्दर कमरे से) कौन हैं ?

ज्ञान : (कार्ड पढ कर) जगन्नाथ !

प्रतिभा : क्रिकेट टीम के कप्तान ?

ज्ञान . कह नही सकता, यहाँ तो केवल जगन्नाथ लिखा हुआ है।

प्रतिभा : वही हैं, वही है। मन्दा ले आ उन्हें, ज्ञान साहब जरा बैठाइएगा। नीली के मित्र है।

मन्दा : (बैक ग्राऊन्ड में) आ जाइए।

(जगन आता है। उसके एक हाथ में पैकेट है)

जगन : (जोश से) Good Afternoon !

ज्ञान : (बेदिली से) Good Afternoon ! आइए, पधारिए।

जगन : मिस नारायण कहाँ हैं ?

ज्ञान : साथ के कमरे में हैं। अभी आती हैं। कहिए कुछ पीजिएगा ?

जगन : धन्यवाद। मै तो यहीं ऊपर के फ़्लैट से आ रहा हूँ।

ज्ञान : ऊपर के फ़्लैट से ?

जगन : मिस नीलिमा के यहाँ से।

ज्ञान : ओह—!

(प्रतिभा नयी साडी और ब्लाऊज पहन कर आती है।)

जगन : (उठ कर) नमस्ते जी !

प्रतिभा : नमस्ते ! कहिए आप ही मिस्टर जगन्नाथ है—इंडीपेंडैंट क्रिकेट टीम के कप्तान ?

जगन : (रग लाल हो जाता है) जी !

प्रतिभा : ये है प्रोफ़ेसर ज्ञानचन्द्र, यूनीवर्सिटी में दर्शन के अध्यापक है।

जगन . (उठ कर बड़े तपाक से मिलाने को हाथ बढाते हुए) हाऊ डू यू डू !

ज्ञान : (यह देख कर कि जगन ने हाथ बढा दिया है अतीव अन्य-मनस्कता से हाथ बढाते हुए—) हाऊ डू यू डू !

प्रतिभा : कहिए कैसे पधारे ?

जगन . नीलिमा जी ने यह रुक्का दिया है और यह पैकेट !

प्रतिभा · (रुक्का पढ़ कर) मै यों ही पहन कर देख रही थी। अभी बदल कर ला देती हूँ।

जगन : यही साडी नीलिमा जी ने माँगी है।

प्रतिभा : जी !

जगन : यह तो बडी सुन्दर लगती है आपको। आपके सुनहले बालों के साथ इस का बॉटल ग्रीन रग . वाह !

प्रतिभा : (मानो प्रशसा को न सुनते हुए) नीलिमा को यह बड़ी पसन्द है।

जगन : पर वे.....वे तो .... वे तो कुछ .

प्रतिभा : मै इतने शोख रंग पसन्द नहीं करती।

जगन : (अनिमेष दृगों से प्रतिमा को देखते हुए) *यह तो लगता है जैसे आप ही के लिए बनी है। नीलिमा जी तो इस में बिलकुल गुड़िया सी दिखायी देंगी।*

प्रतिभा : (उल्लास को छिपा कर विनम्रता से) *मुझे सूफियाना रग पसन्द है। लाइए दीजिए मुझे, मै बदल लूँ।*

जगन : *फिर बदल लीजिएगा, कनाट पेलेस से आकर।*

(साडी को मेज़ पर रख देता है।)

प्रतिभा : *पर मै तो अभी नहीं जा सकती।*

जगन . *नीलिमा जी ने लिखा नहीं।*

प्रतिभा : *उसने लिखा है, पर मेरा मन कुछ ठीक नहीं।*

जगन : *कुछ शॉपिग (Shopping) करनी है और मुझे यह सब आता नहीं।*

प्रतिभा : *नीलिमा क्यों नहीं जाती आपके साथ ?*

जगन : *वे तो फर्नीचर सजाने में लगी हुई है। चलिए वहाँ काफ़ी हाऊस में एक एक कप काफी पिएँगे और.. ...*

प्रतिभा : (जैसे उसकी अन्यमनस्कता और उदासी सहसा दूर हो जाती है ! *काफी ! (... .ताली बजाती है).....That is excellent ! चलिए ज्ञान साहब आप भी चलिए।*

ज्ञान : *परन्तु वर्षा होने वाली है और मेरा स्वास्थ्य आप जानती है.....*

जगन : *मेरी कार जो है। हम सब कार में चलेंगे।*

प्रतिभा : *उठिए ! कैसी घटा घिर के आयी है। चलिए, चलिए।*

(तीनों चलते है।)

(पर्दा।)

दूसरा दृश्य

[पर्दा दो अढाई घटे बाद उसी कमरे में उठता है। प्रतिमा ड्रेसिंग-टेबल के सामने खडी, अपने बालों में अगुलियों से कघी कर रही है। प्रमिला प्रवेश करती है— बाहर तेरह वर्ष की सुन्दर, अबोध, चचल लडकी— प्रतिभा की सब से छोटी बहन है।]

प्रमिला : *मुझे बुलाया छोटी दीदी ?*

प्रतिमा : *मीली, जा तो ज़रा मेरा टायलेट-बक्स उठा ला ! दीदी के कमरे में दर्पण बड़ा है। मै यहीं तैयार हूँगी। अपने जरा से शीशे के आगे तो मुझ से कुछ होता ही नही।*

प्रमिला : *मैं तो नीचे जा रही हूँ। तुम आप जाकर ले आओ।*

प्रतिमा : *बडी अच्छी है मेरी मीली बहन,* (जाकर उसकी पीठ थपथपाती है।) *जा भाग कर !*

प्रमिला : *मै तुम्हारा आडीना का पाऊडर लूगी फिर।*

प्रतिमा : *तुम्हारा जो है।*

प्रमिला : *मैं तुम्हारा लूँगी।*

प्रतिमा : *अच्छा ले लेना। अब जाकर ले आ जल्दी। दीदी आ जायँगी तो फिर भागना पड़ेगा यहाँ से।*

[प्रमिला जाती है। प्रतिमा प्रतिभा की कघी उठा-कर केश सँवारती और गाती है :—]

दुल्हिनियाँ छमा छम छमा छम चली
तन पर हँसता इक इक गहना
सावन भादो जैसे नयना
आज जवानी की फुलवारी
फूली और फली !

प्रमिला : (आते आते दरवाजे से) *किस की दुल्हनियाँ ?* (शरारत से मुस्कराती है) *जगन भय्या की ?*

प्रतिभा : *हश्त ! ला इधर !*

(बराभदे में प्रतिमा और जगन बातें करते हुए आते है ।)

जगन : *यह सामान आप नीलिमा जी के यहाँ भिजवा दें । मै इतने में आप का ब्लाऊज़ और साडी ले आता हूँ ।*

प्रतिभा : *मै अभी दीनू को आवाज़ देती हूँ । दीनू.....दीनू !*

प्रतिमा : *ऊई ! लो यह बक्स और भागो ।*

[दोनों आगन के दरवाजे से भाग जाती है । प्रतिभा प्रवेश करती है, जगन भी साथ है । वह दरवाजे के पास ही रुक जाता है ।]

जगन : *मै अभी जाता हूँ । सिर पर सवार न हूँगा तो वे कभी समय पर न देंगे ब्लाऊज़ ।*

प्रतिभा : (दरवाजे के समीप ही) *मै बड़ी आभारी हूँ । आपसे मिल कर मुझे बडी प्रसन्नता हुई । इतना समय बीत गया और पता भी नहीं चला । यह साड़ी ब्लाऊज़ लाने का कष्ट मैने आपको योंही दिया ।*

जगन : *कष्ट कैसा, मेरी तो बड़ी देर से इच्छा थी आप से भेंट करने की । कई बार अवसर ढूँढ़ने का प्रयास किया, पर मिल ही न सका ।*

प्रतिभा : *आप अच्छे समय पर आये, मै स्वयं कुछ ऊबी ऊबी सी थी ।*

जगन : (एक हाथ से दीवार का सहारा ले, जम कर बात करते हुए) *आप कुछ एक्सरसाइज़ किया करें । स्पोर्टस आदि में भाग लिया करें ।*

प्रतिभा : (कलाई की घडी को देख कर) *एक्सरसाइज़ !*

जगन : (बिना इस बात की ओर ध्यान दिये कि प्रतिमा घडी में समय देख

रही है) शरीर के लिए एक्सरसाइज़ उतनी ही आवश्यक है, जितनी स्वच्छ वायु। पिंग-पांग, बेडमिंटन, टेबल-टेनिस— क्या आपको किसी में भी दिलचस्पी नहीं ?

प्रतिभा : (हँस कर) आज तक तो मेरी एक्सरसाइज़ मानसिक ही रही है। अब सोचती हूँ, कोई न कोई आऊट-डोर (*Out-door*) खेल अवश्य खेला करूँ। अब आप से परिचय हुआ है तो .....

[बात समाप्त करना चाहती है, 'नमस्कार' के लिए दोनों हाथ भी जरा बढाती है, पर जगन नहीं देखता, अपनी बात जारी रखता है।]

जगन : आप अवश्य किसी क्लब की सदस्य बन जाइए। इंडी-पेंडेंट-क्रिकेट-क्लब की मेम्बरशिप बड़ी सीमित है, पर यदि आप चाहें तो बडी सुगमता से उसकी सदस्य बन सकती हैं। मैंने प्रतिमा जी से भी कहा था। बड़ा अच्छा हो यदि आप दोनों.. ...

प्रतिभा : प्रतिमा से... .....!

जगन : उन्हें भी किसी न किसी खेल में अवश्य भाग लेना चाहिए (हँसता है) नहीं वे मोटी हो जायँगी। वास्तव में हमारे देश की सब से बडी ट्रेजेडी ही यह है कि स्त्रियाँ व्यायाम में दिलचस्पी नहीं लेतीं।

प्रतिभा : मैं स्पोर्ट्स की बहुत पसन्द करती हूँ, पर मेरा अधिक समय अध्ययन में गुज़रा है और जिन लोगों से मेरी सगति है; वे सब के सब बुद्धिवादी हैं।

(फिर घडी देखती है।)

जगन : (बिना संकेत समझे) आप मेरे साथ चलिएगा। इंडी-पेन्डेंट-क्रिकेट-क्लब स्पोर्ट्स के विचार से सब से अच्छा क्लब है। आप किसी खेल में भाग तो लें। आप की सब थकन, सब उकताहट जाती रहेगी।

प्रतिभा . (ऊब कर विषय को बदलते हुए) यह दीनू नहीं आया। आवाज देती है दीनू.....दीनू।

दीनू . (आगन से) जी आया।

('जी'....'जी' कहता हुआ भागा आता है।)

प्रतिभा : मोटर मे कुछ सामान पड़ा है, वह सब ऊपर पहुँचा दे।

दीनू : जी !

(सिर झुका कर चला जाता है।)

जगन (जिसे यह दखल-अन्दाजी नहीं भायी, कुछ और जोश से अपनी बात जारी करते हुए) मै आप से सच कहता हूँ, मै बीमार रहा करता था, मेरा रंग पीला-पीला और स्वभाव अत्यधिक चिडचिडा था; परन्तु कालेज में प्रवेश करते ही मैने नियमित रूप से व्यायाम करना आरम्भ कर दिया। मै अत्युक्ति से काम नहीं लेता—हजार-हजार डड तो मै एक ही हल्ले में पेल जाया करता था।

(प्रतिभा एक थकी सी हँसी हँसती है)

जगन . और बी० ए० तक जाते जाते मैं अपने कालेज की क्रिकेट टीम का कप्तान हो गया। क्रिकेट ही नहीं, फुटबाल में भी मैं कालेज की इलैवन में था और फिर लॉग जम्प, हाई-जम्प, सौ गज़ की दौड़, यहाँ तक की क्रास-कटरी-रेस.....

प्रतिभा · (कलाई पर घडी देख कर) सवा पांच बजने को है।

जगन · लीजिए मै चला। आप आरम्भ तो कीजिए किसी खेल में भाग लेना।

प्रतिभा : आप से परिचय हो गया है तो.....

(दोनों हाथ मस्तक तक ले जाती है।)

जगन : लीजिए अभी लेकर आया दोनों चीज़ें। कितनी सुलझी

हुई रुचि है आपकी। यह नया डिजाइन भी कितना अच्छा चुना है आप ने !

प्रतिभा : समय पर पहुँच जाइएगा, नहीं मैं जा न सकूंगी पार्टी में।

जगन जी मैं अभी आया।

(चला जाता है।)

प्रतिभा : (एक थकी सी अंगडाई लेती है) उफ ! कितना सीमित है इस व्यक्ति का घेरा ! कितनी बातें करता है और फिर कितनी निरर्थक और निराभिप्राय — यह भी नहीं देखता कि दूसरा सुनते सुनते ऊब गया है। (बाजू कौच पर पीछे फेंक कर टाँग पसार लेती है) ईश्वर ने क्यों किसी को सम्पूर्ण नहीं बनाया ! कितना सुन्दर और सुडौल है यह जगन, किन्तु मस्तिष्क से कितना शून्य ! और ज्ञान कितने योग्य पर कितने दुबले पतले ! (सिर कौच के बाजू पर टिका कर लेट जाती है) प्रोफेसर नीलाभ.....प्रोफ़ेसर नीलाभ..... कितने सुन्दर और फिर कितने योग्य.....!!

(नीलिमा घबरायी हुई प्रवेश करती है)

नीलिमा : मुझे क्षमा करना तीभा, किन्तु जगन अभी तक आया नहीं और मैं अपनी ओर से सारा प्रबन्ध कर चुकी हूँ।

प्रतिभा . हम काफी पीने चले गये—प्रो० ज्ञान, मैं और जगन। वहीं पर हरदत्त साहब भी मिल गये।

नीलिमा : किन्तु प्रतिभा.

प्रतिभा : रास्ते में मुझे एक रेडी-मेड ब्लाऊज और साडी पसन्द आ गयी। ब्लाऊज की फिटिंग ठीक न थी, इसलिए दर्ज़ी ही को दे आयी। जगन उसे लेने गया है। ठीक कर दिया होगा अब तक दर्जी ने। अत्यधिक सादा डिज़ाइन है ब्लाऊज़ का। स्लीव-लेस .....

नीलिमा : पर तीभा, यह क्या अनर्थ कर दिया तुम ने ? नीहार रो रो

कर प्राण दे देगी। निर्मल और उसके मित्र आ रहे हैं और घर में कोई वस्तु नहीं कि उनकी कुछ आवभगत ही हो सके।

प्रतिभा : कोई वस्तु नहीं ! अभी तो दीनू के हाथ सब कुछ भेजा है।

नीलिमा : दीनू के हाथ, कहीं भी तो नहीं।

प्रतिभा : (नौकर को आवाज़ देती है) दीनू.....दीनू !

दीनू : (आँगन से) जी दीदी !

('जी' 'जी' करता हुआ भागा आता है।)

प्रतिभा : सामान नहीं पहुँचाया इनका ?

दीनू : (आश्चर्य से) इनका, मै तो साथ के फ्लैट में रख आया हूँ।

प्रतिभा : मैंने तुम से कहा था, ऊपर पहुँचा दो !

दीनू : ऊपर ! मैंने समझा आपने कहा 'उधर' ! मैने साथ के बरामदे में रख दिया।

प्रतिभा : बात तो ठीक से सुनते नहीं हो और जो जी में आता है कर देते हो। जाओ, तुरन्त सब सामान ऊपर पहुँचा कर आओ इनके यहाँ।

दीनू : जी, बहुत अच्छा।

नीलिमा : यदि जगन को तुम्हारे साथ ही घूमना था तीमा तो उसने मुझे बता क्यों न दिया। और वहाँ प्रतिमा और नीहार...

प्रतिभा : यह साडी ब्लाऊज़ तुम ने माँग भेजे थे और इसका रग तुमने कहा था सन्यासियों जैसा है और मैने सोचा कि सादा ब्लाऊज़.....

नीलिमा : (क्रोध से) मै वही पहन लेती किन्तु तुम....

प्रतिभा : (बड़े धैर्य से) चीख क्यों रही हो, सब सामान तो तुम्हें पहुँच ही गया है। रहा जगन, तो उसे भी पहुँचा दूँगी।

नीलिमा : मुझे क्या, मैंने तो प्रतिमा के लिए यह सब व्यवस्था की है।

(तेज तेज चली जाती है।)

प्रतिभा : (उसके पीछे जाते हुए) *अरे जा क्यों रही हो, यह साड़ी तो लेती जाओ।*

नीलिमा . *नहीं, मै अपने वाली ही पहन लूँगी।*

[मुडती है और मेज पर से अपनी साडी और ब्लाऊज वाला पैकेट लेकर चली जाती है।]

प्रतिभा . (वापस आते हुए) *ये लोग कितनी जल्दी मिथ्या अनुमान लगा लेते हैं!*

(प्रतिमा आती है।)

प्रतिमा . *दीदी, निगोडी इस आई-ब्रो-पेंसिल का उपयोग ही करना मुझे नही आता। ठीक तो कर दो मेरी भवें।*

प्रतिभा . *अरे तीमा . वाह! तुम तो ऐसे बन-सँवर रही हो जैसे नीहार की नहीं, तुम्हारी वर्षगाँठ है।*

प्रतिमा : *तुम भवें ठीक कर दो दीदी।*

प्रतिभा : *लाओ।*

(प्रतिमा को शीशे के सामने ले जाकर उसकी भवें ठीक करती है।)

प्रतिमा . *यह तुम्हारा ध्यान किधर है दीदी, सँवार रही हो या बिगाड ?*

प्रतिभा : *मै सोचती हूँ कि जगन और तुम्हारी जोड़ी कैसी अच्छी रहे।*

प्रतिमा : *दीदी... . जाओ हम आप ही ठीक कर लेगे सब!*

(तिनतिनाती हुई चली जाती है।)

प्रतिभा : *दोनों सुन्दर और स्वस्थ है, किन्तु दोनो दिमाग़ से कोरे!*

हरदत्त . (दरवाजे पर दस्तक देते हुए) *भई मै आ सकता हूँ ?*

प्रतिभा : *आ जाइए!*

हरदत्त : *तीभा, तुम इतनी जल्दी ज्ञान से उकता जाओगी मुझे इस की आशा न थी।*

प्रतिभा : *मै ज्ञान साहब से उकता नहीं गयी।*

हरदत्त : *उकता नहीं गयीं!* (हँसता है— हैट खूटी पर टाँगता है और कौच में धँस जाता है) *तुम एक प्रबल आत्म-वचना में ग्रसित हो तीभा। मैं तो भला तुम्हें भली भाँति जानता हूँ, किन्तु कोई अपरिचित भी तुम तीनों को देखता तो एक दृष्टि में भाँप लेता कि तुम ज्ञान से कितनी उकतायी हो।*

प्रतिभा : *आप मुझे भली भाँति जानते हैं हरदत्त साहब?*

हरदत्त : *तुम्हें* (तिपाई पर टाँगे पसराते हुए हँसता है।) *मै तुम्हारे स्वभाव के प्रत्येक उतार चढाव से अभिज्ञ हूँ। जगन से बातें करने में तुम इतनी निमग्न थीं कि ज्ञान बेचारे का मुँह ज़रा सा निकल आया। यदि तुम्हें जगन ही के साथ यों व्यस्त रहना था तो ज्ञान बेचारे को साथ ले ही क्यों गयीं?*

प्रतिभा : *जगन ने किसी दूसरे से बात करने का अवसर भी दिया हो! और फिर मै तो अधिक समय आप ही के साथ रही।*

हरदत्त : *यह कोई नया अस्त्र नही तुम्हारा, तुम एक तीर से तीन शिकार करना चाहती हो।*

प्रतिभा : *तीन!*

हरदत्त : (हँस कर) *दो सही, क्योंकि मैं न तो तुम्हारे कृपा-कटाक्ष से जीता हूँ न उपेक्षा-दृष्टि से मरता हूँ।*

प्रतिभा . *श्रीमान तो.. ...*

हरदत्त : *और जैसा मैंने तुम से कई बार कहा है— पूर्णरूप से मै ही तुम्हारे सहचर्य्य के योग्य हूँ। किन्तु प्रतिभा, तुम एक प्रबल आत्म-वंचना में ग्रसित हो। तुम क्या, आत्म-वचना स्त्री के स्वभाव का एक साधारण गुण है।*

प्रतिभा : *आपकी दोनों पत्नियाँ सम्भवतः मरते दम तक आत्म वंचना में ग्रसित रहीं।*

हरदत्त : *मेरी पत्नियाँ ?*

प्रतिभा : *या यों कह लीजिए कि आप ने उन्हें प्रबल आत्म-वंचना में फँसाये रखा। वे समझती रहीं कि उनका पति उनसे प्रेम करता है, उनका भक्त है और शायद मुझे भी आप इसी आत्म-वंचना में फँसा रखना चाहते हैं। आप कहते हैं कि आपको मुझ से प्रेम है।*

हरदत्त : *प्रेम* (बेपरवाही से हँसता है।) *कदाचित नहीं, किन्तु मैं समझता हूँ—मैं तुम्हारा जीवन-साथी होने के योग्य हूँ।*

प्रतिभा : *यद्यपि आप की आयु.....*

हरदत्त : *तुम से केवल दस वर्ष बड़ा हूँ।*

प्रतिभा : *या केवल पन्द्रह !*

हरदत्त : *पन्द्रह ही सही, किन्तु जीवन में दो शादियों के बाद मैं जहाँ पहुँचा हूँ, तुम एक ही के पश्चात् वहाँ पहुँच गयी हो।*

प्रतिभा : *अर्थात् . ?*

हरदत्त : *उकताहट, घुटन और शून्य हम दोनों जीवन में एक सा अनुभव करते हैं।*

प्रतिभा : *आप तो नहीं करते। सिनेमा और पिकनिकें .....*

हरदत्त : *शून्य को भरने का असफल-सा प्रयास हैं। जीवन से समझौता समझ लो। बेचैनी नहीं होती।*

प्रतिभा ; *बेचैनी !*

हरदत्त : *या यों कह लो, बेचैनी कम होती है। तीभा, हम दोनों उस अवस्था को पार कर चुके हैं जब मन रूमान चाहता है। यही तो मुसीबत है। तुम इस यथार्थ को नहीं समझतीं। मेरा सिनेमा और पिकनिकों में मन लगाना और तुम्हारा एक के बाद दूसरे व्यक्ति को अपने साथी के रूप में परखना वृथा है—नितान्त वृथा ! मैं सोच रहा हूँ, मुझे फिर विवाह कर लेना चाहिए।* (*कुछ क्षण दोनों मौन रहते हैं*) *और मैं तुम्हें भी यही परामर्श देना चाहता हूँ। तुम्हें*

भी अब कहीं टिक कर बैठ जाना चाहिए—किसी ऐसे स्थान पर जहाँ तुम्हारी थकी हुई आत्मा को शान्ति मिल सके।

प्रतिभा (हँस कर) और वह स्थान आपके अतिरिक्त किसी के पास नहीं।

हरदत्त . मैं दो विवाह कर चुका हूँ और मेरे दोनों विवाह सफल थे ...

प्रतिभा : खेद है कि इस बात की साक्षी देने वाली अब इस संसार में नहीं।

हरदत्त : तुम मेरी बात चाहे हँसी मे उडा दो, परन्तु तीभा, विवाह वास्तव मे एक कला है और जो लोग इस कला से अनभिज्ञ रह कर विवाह कर लेते है, वे उसे निभा नहीं पाते। जब वे उसे समझने लगते हैं तो जीवन के मधु में विष मिल चुका होता है, जिस से निष्कृति पाना उनके बस में नहीं होता। मैंने काफी मूल्य चुकाकर विवाह की कला सीखी है। मेरे साथ रह कर तुम्हे पूरी शान्ति प्राप्त होगी। जगन और ज्ञान तो अभी बच्चे है।

(मन्दा दरवाजे से झाँकती है।)

मन्दा : बडी दीदी, जगन बाबू आये हैं।

प्रतिभा : आइए!

जगन · (आते हुए) वही बात हुई न प्रतिभा देवी। दर्ज़ी ने बड़े आराम से एक ओर रख दिया था। मैं जाकर उसके सिर पर सवार न होता तो ब्लाऊज कभी समय पर न मिलता।

प्रतिभा : मै किस प्रकार आप का धन्यवाद करूँ? ठीक समय पर ले आये आप। लोग तो आने लगे होंगे। मै ज़रा कपडे बदल लूँ।

हरदत्त : यह तुम ने अच्छी भली तो पहन रखी है साड़ी।

जगन : मैंने तो कहा था—आपके सुनहले बालों के साथ इसका बॉटल ग्रीन रंग अत्यन्त सुन्दर लगता है।

प्रतिभा : (बेपरवाही से) मै तड़क भडक पसन्द नही करती ।

जगन : तो फिर आपने क्या निश्चय किया ? बात यह है कि मार्ग में मुझे कुमार मिल गया, कुमार—इडीपेंडेंट-क्लब का मंत्री ! मैने उससे आपकी बात कही । वह यह सुन कर बडा प्रसन्न हुआ । मै सच कहता हूँ, आप निश्चय तो करें क्लब ज्वाइन (Join) करने का । बैडमिन्टन आपको बेहद सूट (Sunt) करेगी । एक बार आप खेलना तो आरम्भ करें, फिर आप छोड़ न सकेंगी । मै आपको विश्वास दिलाता हूँ, इसी स्पोर्ट्स की कृपा से मै . .

प्रतिभा (उस की बात काट कर मुस्कराते हुए) नीलिमा आपको बुला गयी है । आप चलिए, उनसे कहिएगा हम अभी आ रहे हैं । मै ज़रा कपडे बदल आऊँ ।

हरदत्त : कपडे क्या बदलोगी, ठीक तो हैं ये कपडे ।

मन्दा : ज्ञान साहब आये हैं बडी दीदी ।

ज्ञान : (आते हुए) नमस्कार !

प्रतिभा : (ज्ञान साहब को देख कर) ज्ञान साहब ने कहा था—इसकी तड़क-भड़क बच्चों को फबती है ।

हरदत्त : ज्ञान साहब का सहारा क्यों लेती हो, अपने मन की अस्थिरता ....

जगन . (जो अभी तक वहीं है) किन्तु यह डिजाइन जो आपने चुना, यह भी खूब है !

ज्ञान : कोई नया डिज़ाइन चुना आपने ?

प्रतिभा : अभी यह ख़रीद कर लायी हूँ, आप ही ने तो कहा था ।

ज्ञान : हाँ, इस में सौम्यता है !

जगन : सौम्यता भी और चांचल्य भी, विरक्ति भी और आसक्ति भी ! पहनें तो सही । देखिएगा कितना खिलता है यह आप के रंग पर ! कितना सीधा-साधा और फिर कितना आकर्षक !

(स्वयं ही हँसता है ।)

प्रमिला : (दरवाजे से झाँक कर) *बड़ी दी, नीला दीदी बुला रही हैं आप लोगों को।*

हरदत्त : *भई मैं तो सिनेमा देखने के लिए बुलाने आया था तुम्हे।*

प्रतिभा . *अभी सिनेमा का शो आरभ होने में समय है। ज़रा ऊपर चलिए, कुछ देर बैठ कर चले जाइएगा।*

ज्ञान : *मैं तो यही कहने के लिए आया था कि मुझे तो क्षमा ही कीजिएगा।*

प्रतिभा : *किन्तु प्रोफ़ेसर साहब !*

जगन . (अत्यन्त असगत रूप से हँसते हुए) *बैठिए, बैठिए आप भी ! अब जब प्रतिभा देवी अनुरोध कर रही है ..*

प्रतिभा : *आप लोग बैठिए, मैं साडी बदल कर अभी आयी।*

(भीतर कमरे में चली जाती है।)

(पर्दा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

[पर्दा एक डेढ घटे बाद उसी कमरे में उठता है । कमरे में अँधेरा है । केवल खिडकी और आँगन से मध्यम सा प्रकाश आता है ।

पर्दा उठने के पश्चात् कुछ क्षण तक कमरा खाली रहता है । फिर प्रतिमा तेज तेज़ आती है और धम्म से कौच में गिर कर सिसकने लगती है । प्रमिला उसके पीछे धीरे धीरे आती है ।]

प्रमिला : *दीदी, छोटी दीदी !*

(प्रतिमा सिसकती है ।)

प्रमिला : *छोटी दीदी, बताओ तो सही क्या बात है ?*

(प्रतिमा सिसके जाती है ।)

प्रमिला : *दीदी, अब बता भी दो क्या हुआ ? आकर यहाँ अँधेरे में पड़ रही हो । ऊपर तो अब गाना होने वाला है । विमल बहन गायेंगी !* (उत्तर सुनने के लिए चुप रहती है) *किसी ने कोई तीखी बात कह दी तुम्हें ? . .. दीदी !*

(प्रतिमा सिसके जाती है ।)

प्रमिला : *दीदी देखो, मैं भी रोने लगूँगी ।*

प्रतिमा : *तंग न करो मीला । पड़ी रहने दो अकेली !*

प्रमिला : *यहाँ अँधेरे में, हुआ क्या आखिर ? बत्ती तो जलाओ !*

प्रतिमा : (लगभग रोते हुए) *मीला, मुझे तग न करो ।*

प्रमिला : *मैं जाकर कहती हूँ नीलिमा दीदी से कि छोटी दीदी आप लोगों से रूठ कर नीचे पडी रो रही हैं ।*

(भाग जाती है ।)

प्रतिमा : (भरे हुए गले से अपने आप) *नीलिमा दीदी ... .एक वे हैं कि अपनी सगी बहन से भी बढ कर समझती हैं और एक वे हैं दीदी कि.. . .*

[फूट फूट कर रो पडती है। पृष्ठ-भूमि में नीहार की आवाज आती है।]

नीहार : *तीमा,*

(प्रवेश करती है और बिजली का बटन दबाती है।)

नीहार : *प्रतिमा.....क्या अपराध हो गया मुझ से ...मीला कहती है, तुम मुझ से रूठ कर .*

प्रतिमा : *नहीं, मुझे तुम से गुस्सा नहीं।*

नीहार : *नीलिमा दीदी ने कुछ कह दिया. . ..;*

प्रतिमा : *नहीं वे क्या कहतीं....*

नीहार : *तो फिर ...तो फिर.....जगन भय्या .....*

(प्रतिमा सम्हलते सम्हलते फिर सिसकने लगती है।)

नीहार : *अरे क्या कह दिया जगन ने ?*

प्रतिमा : *कह दिया—उँह ! उन्हे कहने का अवकाश ही कब है ?*

नीहार : *क्यों ?*

प्रतिमा : *देख ही तो रही थीं। जब से ऊपर गये हैं, दीदी के आगे पीछे मँडला रहे हैं। देखते तक नहीं।*

नीहार : *एक जगन ही क्या, वहाँ सभी भँवरे बने हुए हैं।*

प्रतिमा : *तुम्हारा निर्मल भी तो. . .*

नीहार : *निर्मल (व्यथा से हँसती है) और नीला दीदी मेरी सगाई करना चाहती थीं उससे।*

प्रतिमा : *तुम भी तो कम पसन्द न करती थीं निर्मल को।*

नीहार : *हाँ, मैं भी मूर्ख बनी रही इतने दिन, पर जनाब कितनी बातें करते थे और क्षण भर में तीमा दीदी ने जादू कर दिया। एक बार जो उनके पास जाकर बैठे तो बस वहीं के रहे। फिर जो उन्होंने कुछ प्यास की शिकायत की तो गे उनके लिए शरबत लेने। मैं निगोड़ी रास्ते में पड़ गयी। ऐसे देखा जैसे कभी जान पहचान तक न थी।*

प्रतिमा : मुझे दीदी पर क्रोध आता है।

नीहार : और मुझे निर्मल पर।

प्रतिमा . जिस व्यक्ति से मिलती हैं वही उनके गुण गाने लगता है। उसे विवश कर देती हैं कि वह उन्हीं के आस पास मँडलाये और वे पागल, वे समझते है, वे उन्हें पसन्द करती हैं, उनसे प्रेम करती हैं, यद्यपि वे उनसे खेलती है—जैसे बिल्ली चूहे से!

नीहार . दीदी उन सब से घृणा करती हैं, वे उन सब को अत्यन्त तुच्छ समझती हैं। कई बार उनकी मुस्कानों के झीने पर्दे में से घृणा की यह झलक स्पष्ट दिखायी दे जाती है और उनके मस्तक पर नन्हें नन्हें तेवर पड़ जाते हैं। न जाने लोग उनके मुख पर अंकित घृणा को क्यों नहीं देख पाते!

प्रतिमा : तुम भूलती हो। वे उनसे घृणा नहीं करतीं, वे उन्हें पसन्द करती है। यह देख कर कि अपनी एक मुस्कान या एक कटाक्ष से वे इतने लोगों को पागल बना सकती हैं, उनके अहम् को सान्त्वना मिलती है—किसी की प्रसंशा करके, किसी की आलोचना कर, किसी की हँसी उडा कर और किसी को हँसी करने का अवसर देकर वे उन सब को अपने निकट एकत्र कर लेती हैं—उन सब पतंगो में वे चचल दीप-शिखा सी बनी रहती है।

नीहार : कदाचित तुम उनके साथ अन्याय कर रही हो। अपराध दीप शिखा का नही, पतगो का है। मैंने तीभा दीदी को भली-भाँति देखा है। उनका अपराध यह है कि उनके पास सौन्दर्य ही का नहीं, बुद्धि का भी अतुल भंडार है। यही कारण है कि सुरेश के साथ उनकी न बनी, यद्यपि शकुन्तला उसे पाकर अत्यन्त प्रसन्न है। वे किसी को बुलाने नही जातीं। लोग आप-से-आप उनके पास खिचे चले आते है। उनका अपराध यह है कि वे उन्हें धतकार नहीं देतीं। मन बुझा हुआ होने पर भी वे मुस्कराती रहती

हैं। यद्यपि धीरे धीरे उनके मुख पर तृष्णा की रेखाएँ बनती मिटती रहती हैं। निर्मल शायद समझ रहा है कि वह सौ मील की रफ्तार से मोटर चलाने अथवा शतरंज में बड़े बड़े खिलाड़ियों को मात देने की बड़ हाँक कर उन पर बड़ा प्रभाव डाल रहा है। यद्यपि वे उसे केवल बच्चा समझती है और उसकी बातें सुन कर योंही शिष्टाचार-वश हँस देती है। मैं कहती हूँ उसे सूझी क्या ?

प्रतिमा . तुम मानो चाहे न मानो, परन्तु मैं दीदी को जानती हूँ। आज वे जगन को लिये हुए दिन भर घूमती रहीं और फिर आते ही ऐसी छायी पार्टी पर कि किसी को बात करने का अवसर ही नहीं दिया।

नीहार : और मै इतने दिनो से अभ्यास कर रही थी गाने का। अभी पहला बन्द भी समाप्त न किया था जब वे ऊपर आयीं। बस फिर किसको रहती गाने की सुधि—धीरे धीरे सब उठ कर उनके पास जा बैठे। अब इसमें उनका क्या दोष ? यह तो निर्मल और जगन.....

प्रतिमा : पर तुम ने गाना बन्द क्यों कर दिया ?

नीहार : कोई सुन भी रहा था मेरा गाना !

(पृष्ठ-भूमि में निर्मल की आवाज आती है।)

निर्मल : नीहार !.... अरे भई कहाँ हो तुम ?

प्रतिमा : (धीरे से) निर्मल है शायद, (जोर से) आ जाइए।

निर्मल : (भीतर आकर) तुम गाना छोड़ कर नीचे क्यों आ गयीं नीहार ? ईश्वर की कसम ढूँढ ढूँढ कर थक गया तुम्हें। विमल आ गयी है गाने के लिए तैयार होकर... .

नीहार : मिल गया अवकाश किसी को गाना सुनने का !

निर्मल : अरे भई वह प्रतिभा देवी के आने से कुछ disturbance हुई थी, किन्तु मैं तो इस प्रतीक्षा में था.....

नीहार : (व्यग से) कि कब कुमारी नीहारिका देवी फिर अपना मधुर-गान आरम्भ करती है।

निर्मल . *मैं पूछता हूँ, हो क्या गया है तुमको ?*

नीहार . *प्रतिभा दीदी के अनुरोध पूरे करने से मिल गया समय यह सोचने का आपको !*

निर्मल : *तो यह बात है* (खोखला कहकहा लगाता है) *मैं कहता हूँ, तुम भी पागल हो नीहार ।*

नीहार : *जी पागल !*

(जगन शीघ्र शीघ्र आता है ।)

जगन : (खिसियानी हँसी के साथ) *भई, आप यहाँ आकर बैठ गये और वहाँ आप लोगों को ढूँढा जा रहा है । क्यों नीहार, अतिथियों का अच्छा सत्कार करती हैं आप ?*

नीहार : *अवकाश मिल गया आपको भी अपने आस पास देखने का ?*

जगन : *विमल की माता चाहती है कि विमल अपना गाना सुनाये । दो चार बार उन्होने जिक्र किया कि विमल अब अच्छा गाने लगी है । इस पर दो चार ने विमल जी से गाने का अनुरोध किया । पता चला कि नीहार और प्रतिमा गायेंगी तो विमल भी गायेगी । और यहाँ नीहार और प्रतिमा हैं कि नीचे कान्फ्रेन्स में व्यस्त है ।*

(स्वय ही हँसता है ।)

निर्मल : *मै भी इन्ही को बुलाने आया था, किन्तु ये दोनों यहाँ मुँह फुलाये बैठी हैं ।*

जगन : *आखिर क्यों ? कुछ बात भी हो !*

प्रतिमा : (तिक्त मुस्कान से) *कुछ नहीं । डाक्टर ने कहा है, कभी कभी मुँह फुला लिया करो, स्वास्थ्य अच्छा रहता है ।*

जगन : *प्रतिमा !*

प्रतिमा : *आप जाइए न, विमल जी का गाना सुनिये । हमारा मन ठीक नहीं ।*

निर्मल : नीहार !

नीहार : तीमा दीदी की उपस्थिति में आप लोग अपने को इतना भूल गये। आपको इस बात का ध्यान तक न रहा कि कोई और भी बैठा है वहाँ।

निर्मल : उन्होने विशेषकर मुझे बुलाया था। और यह बडी अशिष्टता होती यदि मै किसी प्रकार की क्षमा माँगे बिना उनके पास से उठ आता।

नीहार जी हाँ ! आपको बुलाया था। भला कोई दूसरा था वहाँ बुलाने के लिए।

जगन : और भाई तीमा, मैने तुम से पहले ही कह दिया था। भई मुझे तो तुम्हारी दीदी पर अच्छा प्रभाव डालना था।

प्रतिमा : (व्यग्य भरी मुस्कान से) जी !

(पृष्ठ-भूमि में हारमोनियम बजता है।)

निर्मल : हार कर विमल जी शायद स्वयं ही गाने लगी हैं।

[बरामदे में प्रतिभा और ज्ञान के बातें करते हुए आने की आवाज आती है।]

प्रतिभा : मुझे चिढ़ है इन फिल्मी गानों से— तुच्छ, भावुक फ़िल्मी गाने— न जाने लोग कैसे बैठे बैठे सुना करते हैं इन्हें ?

निर्मल : (धीरे से) चलो चलो। प्रतिभा देवी को चिढ़ है फ़िल्मी गानों से और फिल्मी गीत गाने वालों से।

जगन : (हँसते हुए धीरे से) और फिल्मी गीत गाने वालियों से। चलो चलो इस आँगन से निकल चलो जल्दी।

[सब आँगन के दरवाजे से निकल जाते है। बरामदे की ओर से ज्ञान और प्रतिभा बातें करते हुए आते हैं।]

ज्ञान : आप तो फ़िल्मी गीत गाने का अनुरोध सुन कर ही उठीं, मैं तो सच जानिए, मन से बैठा ही न था। आपके लिए

चला गया था मै तो, नहीं मुझे बडी झुँझलाहट होती है ऐसी पार्टियों से। भला अब विमला की माता जी इस बात पर ज़ोर दे रही है कि सब बातें छोड कर विमला का गाना सुना जाय मानो किसी थर्ड-रेट फिल्म का थर्ड-रेट गाना गाकर वह श्रोताओं पर कोई बडा उपकार कर देंगी।

प्रतिभा : और मिसेज़ गुप्ता चाहती है कि उनकी लड़की का कथा-कली-डॉस देखा जाय। (हँसती है) कथाकली डान्स! किसी ग़रीब क्लर्क से उसका विवाह हो जायगा और सारे का सारा कथाकली डान्स धरा रह जायगा।

(पृष्ठ भूमि में गाने की आवाज़ आती है।)

मुझे तुम से मुहब्बत रफ्ता रफ्ता होती जाती है।
कि ग़म बेदार होता है मसर्रत सोती जाती है॥

— : लीजिए, यह था गाना जिसे गाने के लिए विमला आतुर थी। क्षमा कीजिएगा ज्ञान साहब, आप यह दरवाज़ा बन्द कर दीजिए। मेरा तो जी उलझने लगता है ऐसी घटिया ग़ज़लों और गानों से। मै तो सचमुच उकता गयी हूँ यह मुहब्बत के गाने और मुहब्बत की बातें सुन कर।

ज्ञान : मुहब्बत एक सुकुमार और पवित्र भावना है, किन्तु इन फिल्मों ने इसे सस्ती और घटिया बना दिया है। मै प्रातः आपसे यही निवेदन कर रहा था, उच्च कोटि का प्रेम पवित्र और चिर-स्थायी होता है और पवित्र और चिर-स्थायी प्रेम इतना वासना-मय नहीं होता।

प्रतिभा : (हँस कर) कुरूप किन्तु सुशील लड़की ..

ज्ञान : (खिसियानी हँसी के साथ) वह तो मैने एक उदाहरण दिया था। वास्तव में मेरा अभिप्राय यह था कि जिस प्रेम की नींव सहचर्य पर खडी हो— सुन्दरता और कुरूपता का प्रश्न नहीं—उसी में आध्यात्मिक प्रेम के बीज होते हैं। कदाचित.. ...जो मैं कहना चाहता हूँ, उसे ठीक व्यक्त

नहीं कर पाता। देखिए, जैसे हम एक मुद्दत से मिलते जुलते है। एक दूसरे के स्वभाव को जानते और पसन्द करते है . ...

प्रतिभा : (अपने विचारों की रौ में) मै सोच रही थी कि यह घटिया फिल्में किस प्रकार हमारे जीवन को खोखला किये जा रही है। बडे से बडा कट्टर-पंथी अपने लड़के लडकियों को ये फिल्में दिखाने ले जाता है और जब उसके बच्चे फिल्मी गाने गाते हैं तो सदाचार, धर्म, मान-प्रतिष्ठा की तलवारें लेकर उनके सिर पर जा सवार होता है। क्या युवा लड़कियाँ और क्या युवा लड़के—सब इसी फ़िल्मी-प्रेम के बहाव में बहे जा रहे है। अभी पार्टी मे जगन और निर्मल ने मुझ पर इसी प्रकार का फिल्मी-प्रेम प्रकट करने का प्रयास किया।

ज्ञान : (आश्चर्य से) फिल्मी !

प्रतिभा : फिल्मी का शब्द तो उन्होंने प्रयुक्त नहीं किया, किन्तु उनके हाव भाव, उनका कहने का ढग वैसा ही था।

ज्ञान : दोनों ने एक ही बार ?

प्रतिभा . नही, जगन ने पहल की। मै दोपहर ही से देख रही थी कि वह मुझ से कुछ कहना चाहता है। यथा सम्भव उसे टालती रही। अवसर मिलते ही उसने कह डाला.....

ज्ञान : क्या कहा उसने ?

प्रतिभा : (मुस्कुराते हुए) पहले तो कुछ हकलाया। फिर जो कुछ उसने कहा, उसका तात्पर्य यह था कि उसे बहुत देर से मुझ पर श्रद्धा है। जब से उसने प्रतिमा से मेरे सम्बन्ध में सुना है, वह मन ही मन मुझ से प्रेम करने लगा है। उसने नीलिमा से विशेष आग्रह करके मुझे बुलाया है और वह मुझ से मिल कर इतना प्रसन्न हुआ है जितना कभी नहीं हुआ।

ज्ञान : (हँसते है) वाह !

प्रतिभा . (अपनी बात को जारी रखते हुए) कि मैंने उसका काफी पीने का निमन्त्रण स्वीकार करके जीवन भर के लिए उसे अपना बना लिया है। इस पार्टी से नीहार को इतनी प्रसन्नता नहीं हुई जिसकी वर्ष गाठ है; निर्मल को इतना हर्ष नही हुआ जो उसका भावी मॅगेतर है; किसी को इतना उल्लास नहीं हुआ जितना उसे हुआ है।

ज्ञान : आपने उसे क्या उत्तर दिया ?

प्रतिभा . (हॅसते हुए) मैंने उसके सिर पर हाथ फेरा और कहा—तुम बडे बरखुरदार हो, किन्तु मैं तुम्हारी सगति के योग्य नहीं। यह सच है कि मै स्पोर्टस की खबरें पढ़ना पसन्द करती हूँ और टेस्ट-मैचों से भी मुझे दिलचस्पी है, किन्तु यह दिलचस्पी केवल बौद्धिक है। मेरे स्वभाव के उतार-चढ़ाव से तुम चार दिन में उकता जाओगे।

ज्ञान : (तनिक और ज़ोर से हॅसते हुए) वाह—!

प्रतिभा : प्रतिमा को उससे प्रेम है और यद्यपि उसने मुझ से कहा नहीं, किन्तु मै जानती हूँ। सो मैंने जगन से कहा कि उसे प्रतिमा तक ही अपना प्रेम सीमित रखना चाहिए और यदि सम्भव हो तो उसी को बैडमिन्टन, पिग-पाँग या टेंबल-टैनिस की चैम्पियन बनाने की चेष्टा करनी चाहिए।

ज्ञान : (प्रसन्न होकर ठहाका मारते हुए) वाह ! और निर्मल.....?

प्रतिभा · उसका बस चलता तो वह फ़िल्मी अभिनेताओं की भाँति पूरे सुर और लय में अपना प्रेम प्रकट करता, पर उसने फिल्मों से चुने हुए कुच्छेक वाक्य कहने की ही कृपा की। जब मैंने उसे बताया कि वह अभी बच्चा है और नीहार उससे रूठ कर नीचे चली गयी है तो उसका मुख कानों तक लाल हो गया और वह भाग गया (हॅसती है।) अब जाकर शायद नीहार पर अपने प्रेम का रौब गाँठ रहा होगा।

ज्ञान : (दीर्घ-निश्वास लेता है।) परन्तु प्रतिभा देवी, सिनेमा देखने से

एक लाभ तो हो जाता है।

प्रतिभा . क्या ?

ज्ञान : प्रेम प्रकट करना आ जाता है।

प्रतिभा : (चुप रहती है।)

ज्ञान : अब मै हूँ, लाख चाहता हूँ अपने भाव व्यक्त करूँ ...

प्रतिभा : आप !

ज्ञान : हर बार सुन्दर शब्द ढूँढता हूँ, किन्तु मुझे वे बडे घटिया लगते है। मै आप से प्रेम करता हूँ—यह कहना मुझे आकाश की ऊँचाइयों में उडते उड़ते सहसा धरती पर आ गिरना प्रतीत होता है। तिस पर भी मै कई बार कहना चाहता हूँ—प्रतिभा, मै आप से प्रेम करता हूँ—असीम प्रेम करता हूँ !

प्रतिभा : यह पार्टी का प्रभाव है, तेज़ गर्म चाय का, वहाँ के वातावरण का या फिर जगन और निर्मल की मूर्खता का ?

ज्ञान : प्रतिभा ! आप नहीं जानतीं, मैं कब से यह कहने के लिए आकुल हूँ, किन्तु मुझे कभी शब्द नहीं मिले, (सहसा जैसे उसे शब्द मिल रहे हों) जब मैं आपके इन सुनहले बालो को देखता हूँ, जिनमें हल्की हल्की लहरियाँ ऊषा के प्रशस्त प्रागन में छोटी छोटी बदलियों सी लगती हैं, जब मैं आपके नयनों की अथाह गहराइयों मे झाँकता हूँ तो मुझे अनुभव होता है.....

प्रतिभा : ज्ञान साहब !

ज्ञान : मुझे अनुभव होता है जैसे एक विचित्र पुलक मेरी नस नस मे दौड़ रहा है। जैसे मेरी समस्त अन्यमनस्कता धुल निखर कर, स्वच्छ निर्मल उल्लास में परिणित हो गयी है।

प्रतिभा . आज ही आप ने कहा था—हम लोग प्रेम के टाइफ़ाइड से मुक्त हो गये हैं।

ज्ञान : *प्रतिभा !*

प्रतिभा : *तो क्या मै अब तक धोखे में रही ? तो क्या जगन, निर्मल और आप में कोई अन्तर नहीं ? मै तो आप को उन सब से कहीं ऊँचा, कहीं योग्य, कहीं समझदार समझती थी। मैं तो आपको बुद्धिवादी.. .*

ज्ञान : (उठते हुए) *मुझे क्षमा कर दो प्रतिभा ।*

प्रतिभा : *मुझे क्या पता था कि आप भी उसी स्तर पर उतर आयेंगे ।*

ज्ञान : *मैं लज्जित हूँ। अपनी इस मूर्खता के लिए क्षमा चाहता हूँ। नमस्कार !*

(शीघ्र शीघ्र चला जाता है ।)

प्रतिभा : (उसके पीछे जाते हुए) *ज्ञान साहब !.....ज्ञान साहब... !!*

(दरवाज़े को पूर्णतयः खोल देती है)

— : *ज्ञान साहब !*

[प्रोफ़ेसर ज्ञान नहीं आते, पर गाने की ध्वनि फिर आने लगती है। विमला पूर्ववत गा रही है :]

यह ग़म से कुछ तआरुफ़ आज कल ही का नहीं मेरा।
अज़ल से जिन्दगानी बोझ ग़म का ढोती जाती है ॥

— . *ओह ! ये लचर फ़िल्मी गाने !*

[ज़ोर से दरवाज़ा बन्द करके कौच पर आकर थकी थकी सी धँस जाती है ।]

— : *कहीं मुक्ति नहीं—इस साधारण, भावुक, घटिया वातावरण से कहीं मुक्ति नहीं ।*

(उठ कर कमरे में घूमती है ।)

— : *प्रोफ़ेसर नीलाभ !* (दीर्घ-निश्वास लेती है ।) *प्रोफ़ेसर नीलाभ ! उनके बिना मुझे कहीं शान्ति न मिलेगी।*

काश वे इतने ऊँचे शिखर पर न बैठे होते ! काश वे इतने विरक्त न होते !

(टेलीफ़ोन उठाती है। बाहर से हरदत्त की आवाज़ आती है)

हरदत्त : (बाहर से) प्रतिभा !

प्रतिभा : (चोंगा रख देती है) आइए !

हरदत्त : शो अभी अभी समाप्त हुआ। मैंने कहा जाते जाते नीहार को बधाई देता चलूँ। पार्टी समाप्त हो चुकी ?

प्रतिभा : खाना आदि तो हो चुका। अब गाना हो रहा है। पार्टी में तो आप गये नहीं ...

हरदत्त : फ़िल्म आरम्भ हो जाता।

प्रतिभा : कौन सा फ़िल्म था ?

(आकर कोच पर बैठ जाती है।)

हरदत्त : मुहब्बत।

(उसी कौच पर, किन्तु तनिक सट कर बैठता है।)

प्रतिभा : तो शायद यह उसी फ़िल्म का गाना है— मुहब्बत हमको तुमसे रफ़्ता रफ़्ता होती जाती है।

हरदत्त : क्यों ?

प्रतिभा : वही घटिया और भावुक गाना। आप को तो पसन्द आया होगा।

हरदत्त : हाँ, मुझे तो पसन्द आया। मैं कहता हूँ प्रतिभा, तुम इस साधारणता से घृणा क्यों करती हो ? इन सीधे साधे सामान्य भावों से दूर क्यों भागती हो ? यह जीवन और इस जीवन का समस्त कोलाहल इसी साधारणता पर तो अवलम्बित है। तुम इससे सदा दूर भागती हो, किन्तु जीवन की गति तो इसी के दम से है। मुझे यह साधारणता पसन्द है। रूमान-पसन्द की भाँति, मैं पास

की वस्तुओं से दूर नहीं भागता (हँसता है) रूमान-पसन्द सदैव अपनी पत्नी को छोड कर दूसरे की पत्नी से प्रेम करेगा वर्तमान पत्नी के बदले पहली पत्नी के गुणों का रोना रोयेगा। वह सदैव उस वस्तु के पीछे भागेगा जो उसे प्राप्त नहीं।

प्रतिभा : हूँ !

हरदत्त : और न ही सदेहशील बुद्धिवादी की भाँति मै प्रत्येक वस्तु से असन्तोष प्रकट करता हूँ (हँसता है।) बुद्धिवादी प्रत्येक वस्तु से असन्तुष्ट रहता है, प्रत्येक वस्तु में दोष निकालता है। रूमान-पसन्द को तो शान्ति प्राप्त हो भी सकती है, किन्तु बुद्धिवादी के भाग्य मे शान्ति नहीं।

प्रतिभा : (मुस्करा कर) श्रीमान अपनी गिनती किन में करते हैं ?

हरदत्त : मैं साधारण, नार्मल व्यक्ति हूँ। मै न रूमान-पसन्द हूँ न बुद्धिवादी ! मै तो यथार्थवादी हूँ।

प्रतिभा : (व्यग्य से) यथार्थवादी !

(जोर से हँस देती है।)

हरदत्त : (कुछ उत्साह से) किन्तु तुम रूमान-पसन्द भी हो और बुद्धिवादी भी। रूमान-पसन्दों की भाँति तुम जीवन से, जीवन की दैनिकता से डरती भी हो और उस असन्तोष को भी प्रकट करती हो जो बुद्धिवादियों का विशेष गुण है। देखो प्रतिभा, नन्हीं नन्हीं खुशियों से दूर न भागो। इन्हीं में जीवन को ढूंढो। इन्हीं में तुम्हे शान्ति मिलेगी।

प्रतिभा : शान्ति, इस घटिया वातावरण में शान्ति ?

हरदत्त : तुम्हें किसी के प्रेम की आवश्यकता है !

प्रतिभा : (तिक्त- मुस्कान के साथ) प्रेम की !

हरदत्त : (ज़रा आगे बढता हुआ) तुम्हे किसी के सुदृढ हाथों की आवश्यकता है जो तुम्हें तुम्हारे स्वप्न-ससार से इस संसार में खींच लायें। मै अभी जो फ़िल्म देख कर आया हूँ, उस

में भी एक तुम्हारे ही जैसी नायिका का चरित्र प्रस्तुत किया गया है।

(आगे बढता है। प्रतिभा तनिक पीछे खिसक जाती है।)

प्रतिभा : *मेरे ही जैसी ?*

हरदत्त : *निपट तुम्हारे जैसी नहीं, किन्तु एक गुण तुम दोनों में समान-रूप से विद्यमान है। वह भी तुम्हारी तरह प्रेम को घृणा की दृष्टि से देखती है। वास्तव में वह प्रेम की अभिव्यक्ति से झिझकती है।*

प्रतिभा : *मै प्रेम की अभिव्यक्ति से झिझकती नहीं, मुझे प्रेम हो भी किसी से।*

हरदत्त : *कभी तुम नीलाभ को चाहती थीं।*

प्रतिभा : *नीलाभ को.....कभी !* (हँसती है, फिर दीर्घ-निश्वास छोडती है।) *मन चिरकाल से शुष्क-शून्य मरु बन चुका है। कहीं यदि घास के तिनके थे, तो वे भी कब के मुरझा गये हैं*

हरदत्त : (तनिक और आगे बढ़ते हुए) *यह भी एक भ्रम है तम्हारा। तुम अब भी चाहती हो कि तुम से प्रेम किया जाय। अब तुम और भी चाहती हो कि तुम से प्रेम किया जाय। बिल्कुल उस फिल्म की नायिका की भाँति, तुम्हें भी किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो तुम्हारे इस संकोच को दूर कर दे। बरबस तुम्हें अपने आलिंगन में बाँध ले।*

(सहसा प्रतिभा को अपनी बाहों में भींच लेता है।)

प्रतिभा : (उस के बाहुपाश से अपने को मुक्त करने की चेष्टा करते हुए) *हरदत्त साहब !*

हरदत्त : (उसे आलिंगन में भींचते हुए) *मै तुम से प्रेम करता हूँ तीभा ! मैंने कई बार अपने आप को समझाने की चेष्टा की है कि मैं तुम्हें केवल पसन्द करता हूँ, तुम से प्रेम नहीं करता, किन्तु यह आत्म-वचना है। मुझे तुम से प्रेम है*

तीभी, तुम से असीम प्रेम है ! तुम मेरी चेतना पर, मेरे समस्त अस्तित्व पर छायी जाती हो ।

प्रतिभा : (उस के बाहुपाश से स्वतन्त्र होकर हाँपती हुई उठ खडी होती है ।) *हरदत्त साहब !*

हरदत्त : (बाहें फैलाये उस की ओर जाते हुए) *मै जानता हूँ, तुम कहोगी— ये सस्ते, भावुक, फिल्मी- वाक्य हैं, किन्तु प्रतिभा ये अनादि है—चाँद तारों की भाँति अनादि— साधारण, किन्तु सनातन ! तुम इन से भागती क्यो हो ?*

प्रतिभा : (पूर्ववत काँपते हुए) *हरदत्त साहब, वही रहिए । आप पागल हो रहे हैं । मेरा विचार था आप समझदार है, जीवन की कटुताओं ने आप को गम्भीर बना दिया होगा, किन्तु आप तो अभी तक बच्चे है ।*

हरदत्त : (बढी हुई बाहें गिर जाती हैं) *प्रत्येक व्यक्ति अपने आवरण के भीतर मात्र एक बच्चा है । प्रतिभा, तुम समझती हो. ....*

प्रतिभा : (क्रोध के कारण रुधे हुए गले से) *चले जाइए आप यहाँ से ! चले जाइए !! आप की उपस्थिति मे मेरा दम घुट रहा है, मेरा सिर चकरा रहा हैं । चले जाइए ! आप चले जाइए !!*

हरदत्त : *तीभा !*

[कुछ पग बढ़ता है, किन्तु प्रतिभा के आग्नेय-नेत्र देख कर रुक जाता है ।]

प्रतिभा : (चीख कर) *जाइए !*

हरदत्त : *मै जाता हूँ, पर शान्त-मन से मेरी बातों पर....*

प्रतिभा : (चीख कर) *जाइए !*

हरदत्त : *तुम्हारी इच्छा किन्तु .....*

(कंधे झटकटाता हुआ चला जाता है ।)

प्रतिभा : (थकी हुई सी कौच पर गिर जाती है।) उफ ! कितना बचपन है इस व्यक्ति में (दीर्घ-निश्वास लेती है) इतने दिन से यह आता है और मै इसे जान तक न सकी (कुछ क्षण मौन रहती है, फिर धीरे-धीरे अपने आप बदबदाती है) —प्रत्येक व्यक्ति अपने आवरण के भीतर मात्र एक बच्चा है ! क्या अपने ख़ौल के भीतर मै भी मात्र बच्ची हूँ—बच्ची—जो चाँद को चाहती है और खिलौनों से जिसे सान्त्वना नही मिलती ! (फिर दीर्घ-निश्वास लेती है।) किन्तु चाँद बहुत ऊँचा है—बहुत दूर है—नीलाभ—नीलाभ—उफ़ !

(मुख को दोनों बाहों से छिपा कर सिसकने लगती है।)

(पर्दा गिरता है।)